IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11,S Iss 07, 2022

उपन्यास 'सम्राट चन्द्रगुप्त' के पात्र एवं चरित्र–चित्रण

डॉ.ओममिश्र .प्रोफेसर
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रस्तुत उपन्यास में निम्न पात्र पाए जाते है नायक तथा उसके अन्य सहायक और अन्य पात्र उपन्यास का नायक चाणक्य है चंद्रगुप्त है या यह निर्णय करना बहुत ही कठिन है। वैसे भारत के उत्थान में चाणक्य की भूमिका भी कम नहीं है मेरे अनुसार उपन्यास का नायक चाणक्य ही होना चाहिए। जैसा कि कई विद्वानों ने माना है क्योंकि चाणक्य ने ही चंद्रगुप्त को एक सुदृढ़ एवं सटीक रणनीति प्रदान की, मार्गदर्शन किया। जिस रास्ते से सफलता मिलनी थी। वही रास्ता चाणक्य ने चंद्रगुप्त को दिखाया उसी रास्ते पर चलते–चलते राजा चाणक्य राजा बन गया। और सफलता प्राप्त कर सका तथा भारत का उत्थान कर सका। हाँलाकि चाणक्य भी नायकोचित प्रतीत होता है वह किंग मेकर है उसे राजा बनाने की कला मालूम है राजा बनने वाले के गुणों की पहचान वह कर लेता है। उसमें परखने की कला है तभी वह चन्द्रगुप्त को पहचान कर उसमें राजा बनने के गुण परा लता हैं उसका पल–पल मार्गदर्शन भी करता है तभी चन्द्रगुप्त साफ लराजा बन पाता हैं अतः मुख्य कार्य तो चाणक्य की करता है भात को ऐसे ही नायक की जरूरत है। जो नवयुवकों को जागरूक कर सके तथा राष्ट्र के लिए रणवाँकुरों का तैया कर सके जो संस्कार युक्त राष्ट्र के निर्माण में पूर्ण सहायक सिद्ध हो सके।

चंद्रगुप्त एक महान राजा है उसने राजा के सारे गुण विद्यमान है। चंद्रगुप्त मौर्य एक साधरण सैनिक था। उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर भारतीय युवक प्रेरणा ग्रहण कर सकते है। इसलिए पं. दीनदयाल उपाध्याय ने सम्राट चंद्रगुप्त को उपन्यास का नायक बनाया।

दीनदयाल उपाध्याय ने चंद्रगुप्त के वैयक्तित्व को विलक्षण बुद्धि वाला अध्यवसायी अवसर का पारखी, वीर, साहसी और सपफलतम व्यक्ति के रूप में निरूपित किया है।

चंद्रगुप्त मौर्य को पं. दीनदयाल उपाध्याय ने एक अत्यंत वीर साहसी और निर्भीक एवं स्वतंत्र प्रकृति नवयुवक के रूप में चित्रित किया है जो निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य उन कतिपय इतिहास निर्माताओं में से हैं, जिनको पग–पग पर सपफलता ने वरण किया। इसका श्रेय जहाँ उनकी तीव्र लगन एवं अनवरत अध्यवसाय को है, वहाँ उनकी उस विलक्षण बुद्धि को भी है, जिसके कारण उन्होंने अपने हाथ से किसी भी अवसर को नहीं जाने दिया। शिकारी की भांति वे उचित अवसर की ताक में रहे तथा अवसर आने पर अपनी संपूर्ण शक्ति से सर्वस्व की बाजी लगाने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं की। कूटनीति के समस्त दाँव–पेंच अपने गुरु एवं सहायक आर्य चाणक्य से उन्होंने व्यावहारिक रूप में सीखे थे।''[1]

वे अत्यंत वीर एवं साहसी थे। उन्होंने सदैव अपनी सेना के आगे रहकर युद्ध किया, विपत्तियों में स्वयं सबसे पहले कूदे और पिफर अपने सहायक देशभक्तों को आहान किया। अपने साहस एवं वीरता के कारण ही वे प्रथम तो आलिक्सुंदर के विरुद्ध विद्रोह करके और पिफर सेलेउक् पर विजय पाकर पंजाब, सीमांत और पश्चिम भारत की समस्त वीर जातियों से सम्मान एवं श्रद्धा पा सके। उनकी निभीक एवं स्वतंत्र प्रकृति का पता तो उस घटना से ही लग जाता है, जिसमें वे अलिक्सुंदर से मिले और उसे कापफी जली–कटी सुनाई। इतने निभीक एवं स्पष्टवादी होने पर भी वे सदैव लोकप्रिय रहे। इसी लोकप्रियता के कारण मगध के सिंहासन पर बैठने के पूर्व ही वे जनता के हृदय–सम्राट् बन चुके थे। अपने इसी गुण के कारण मालव, क्षुद्रक जैसे गणराज्यों के नागरिकों पर, जो कि प्रजातंत्री शासन के

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

कारण अत्यंत स्वतंत्रा मनोवृत्ति के थे, आधिपत्य जमा सके। उनकी लोकप्रियता तथा भारत के बड़े–बूढ़े सबके हृदय में आदर का स्थान प्राप्त करने का कारण था उनकी निस्वार्थ देशभक्ति। यदि अपने ही लिए उन्होंने ये सब प्रयत्न किए होते तो शायद देश उनका इतना साथ न देता।

सम्राट् चंद्रगुप्त अपने काल के एक महान् विजेता भी थे परंतु अपनी विजय केदमद में मत्त होकर उन्होंने शत्रु के प्रति कभी क्रूरता का बरताव नहीं किया। हिंदू संस्कृति की अमूल्य निधि सहिष्णुता को उन्होंने कभी नहीं छोड़ा। परंतु सहिष्णुता, दया और मैत्री के बड़े–बड़े शब्दों के मायाजाल में फँसाने वाले शत्रु की दाल भी उन्होंने नहीं गलने दी। विजय के पश्चात् न तो अलिक्सुंदर के समान उन्होंने विजित राजा का निर्दयतापूर्वक वध करवाया और न पर्वतक के समान विजयी होने पर भी विजित के चंगुल में फँसे। सेलेउक् को हराकर उससे उन्होंने सम्मानपूर्ण मैत्री की, परंतु अपने देश के हित और गौरव को भी आँच नहीं आने दी।

वे एक महान् विजेता ही नहीं, एक सुयोग्य शासक भी थे। साम्राज्य को दृढ एवं शक्तिशाली बनाने के लिए उन्होंने बहुत से कार्य किए। अपनी प्रजा एवं देशवासियों के हित में उन्होंने कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी। देश की आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, बौद्धिक सर्वांगीण उन्नति के लिए सब प्रकार के कार्यों का भार मौर्य शासक ने अपने ऊपर ले रखा था। साम्राज्य की इतनी सुंदर व्यवस्था थी कि पाटलिपुत्र से संचालित सम्राट् की प्रत्येक आज्ञा का पालन आज के भारतीय साम्राज्य से दुगुने विस्तृत साम्राज्य के कोने–कोने में बिना किसी अपवाद के होता था।

सम्राट् चंद्रगुप्त स्वयं अत्यधिक परिश्रमी थे। जिस परिश्रम से उन्होंने साम्राज्य प्राप्त किया था, उसी प्रकार परिश्रम एवं दक्षतापूर्वक शासन के कर्तव्य का पालन किया। शासन के प्रत्येक विभाग का उनको ज्ञान था तथा समय–समय पर उनकी जाँच–पड़ताल भी करते रहते थे। न्यायालय में स्वयं जाकर बैठते थे तथा जनसाधारण की भी उनके पास तक पहुँच थी। निश्चय ही कौटिल्य के अर्थशास्त्रमें वर्णित आदर्श सम्राट् का चित्र उन्हीं के आधार पर बना है। आदर्श सम्राट् महाकुलीन, दैवबुद्धि, दीर्घदर्शी, धार्मिक, वीर, उत्साही, दृढ–निश्चयी एवं स्वार्थ–त्यागी होना चाहिए। उसका व्रत कर्तव्य के लिए सदा तैयार रहना हैय उसका यज्ञ शासन संबंधी कार्यों को ठीक–ठीक करना है; सब प्रजा को समान देखना उसका पुण्य है, प्रजा के सुख में उसका सुख, प्रजा के हित में उसका हित हैय उसको अपना नहीं किंतु प्रजा का हित ही प्रिय होना चाहिए। राष्ट्र की स्वतंत्राता और शक्ति के केंद्र सम्राट् चंद्रगुप्त निश्चय ही इस आदर्श के अनुयायी थे।

चंद्रगुप्त एक राष्ट्र प्रेमी योद्धा है भारत के गुलामी के बारे में सुनते ही वे भड़क उठता है–''चंद्रगुप्त का हाथ एकदम तलवार की मूँठ पर गया, मानो सामने ही यूनानी उनको गुलाम बनाने आ रहे हों, और वह उनसे लड़ने को उद्यत है। उसकी त्योरियाँ चढ़ गईं। ''भारतवर्ष गुलाम? नहीं, कभी नहीं!'' उसने सरोष पर दृढ़ता से कहा।''[2]

राष्ट्र की रक्षा के लिए एक कुशल नेता के चयन की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैμ''भैया चंद्रगुप्त हमारे महाराज होंगे।'' सब एकदम चिल्ला उठे। और दूसरे ही क्षण वह स्थान ''महाराज चंद्रगुप्त की जय!''[3] मगधेश चंद्रगुप्त की जय! के घोष से गूँज उठा। उस छोटे से दल ने एक ही क्षण में सैनिक चंद्रगुप्त को महाराज चंद्रगुप्त बना दिया। परंतु वे यह नहीं जानते थे कि चंद्रगुप्त को महाराज बनाना इतना सरल नहीं था। एकाएक अमात्य 'राक्षस' अपने चार सहचरों के साथ जब वहाँ आ धमका, तब उनको मालूम हुआ कि जयघोष के द्वारा अपने निश्चय की डौंड़ी पीटना उनके जीवन की सबसे बड़ी भूल हुई।''[4]

सम्राट् चंद्रगुप्त मौर्य की विजयों, उनका साम्राज्य–निर्माण, उनकी सपफल शासन–प्रणाली तथा प्रजाहित के कार्यों की दृष्टि से वे न केवल भारत के ही, वरन् संसार के सफल विजेताओं, राष्ट्र–निर्माताओं और शासकों में एक उच्चस्थान पाते हैं। इसीलिए उन्हें मुद्राराक्षस ने विष्णु का अवतार तक कहा है। जिस दृष्टिकोण से हमने अपने अन्य महापुरुषों और राष्ट्र–निर्माताओं को विष्णु का अवतार माना है, उसी दृष्टि से देखा जाए तो मुद्राराक्षस का कथन किसी भी प्रकार से अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता।''[5]

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

चाणक्य एक उच्च कोटि का व्यक्ति है उसने राष्ट्र की रक्षा के लिए सारे प्रयत्न किएμ''गुरु को प्रणाम करके शीलभद्र चला गया। आर्य चाणक्य के मन में आज विचारों का तूपफान मचा हुआ था। भारत में एक विदेशी राजा का प्रवेश, और वह भी यहाँ के राजा से हारने के बाद। उनको मन–ही–मन क्षोभ एवं क्रोध हो रहा था पर्वतक की मूर्खता पर। शत्राु को तो मूल से उखाड़ पफेंकना चाहिए यह नीति कहती है। उसका घर में घुसना, पिफर चाहे वह अपने को कितना ही हितू क्यों न सिद्ध करे, हानिकारक ही है। खैर, अब पिछली भूल पर रोने से क्या लाभ, उन्होंने मन–ही–मन कहा, 'हाँ आगे का प्रबंध करना चाहिए।' उन्होंने निश्चय किया कि मगध जाकर वहाँ के जनमत एवं सेना को अलिक्सुंदर के विरु(करेंगे ही, परंतु उसके जीते हुए प्रदेशों में भी विद्रोहाग्नि को भड़काकर उसे दोनों ओर से घेरकर पीस देंगे। इसी प्रकार की बहुत सी योजनाएँ उनके मस्तिष्क में घूमती रहीं। लगभग दोपहर होने पर शीलभद्र ने चंद्रगुप्त के साथ कुटी में प्रवेश किया। उसने देखा कि गुरु चाणक्य को वह जिस स्थिति में छोड़ गया था, उसी में अभी तक बैठे हैं तथा किसी गहन विचार में मग्न हैं। शीलभद्र और चंद्रगुप्त दोनों ने प्रणाम किया और बैठ गए। चंद्रगुप्त मन–ही–मन यह सोचने लगा कि इस काले–कलूटे ब्राह्मण ने जाने क्यों मुझे बुलवाया है। कहीं 'राक्षस' ने इसको मेरी खबर लाने तथा पकड़ लाने को तो नहीं भेजा है अथवा यवनों का कोई गुप्तचर तो नहीं है, यह विचार उसके मन में आते ही उसने अपनी तलवार की ओर देखा और पिफर निश्चितता से बैठ गया। कितना अधिक था उसका आत्मविश्वास।''[6]

चाणक्य बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से अपनी योजनाएँ बनाता है और अपनी सहपाठी अमात्य के साथ उसके राजा से मिलने तथा देश की रक्षा की योजना बनाता है–''दूसरे दिन प्रात काल ही अमात्य राक्षस तथा चाणक्य राजमहल के द्वार पर पहुँच गए। महाराज को सूचना भेजी गई। बड़ी देर बाद उत्तर आया कि बुला लाओ। दोनों अंदर गए। महाराज उस समय अपने प्रेमोद्यान में झूला झूल रहे थे। नर्तकियों का झुंड–का–झुंड उन्हें घेरे खड़ा था। मदिरा–पात्रा पास ही रखा था। अमात्य को देखते ही महाराज कहने लगे, ''अमात्य, आप हमको व्यर्थ ही कष्ट देते हैं। आप ही क्यों नहीं सब काम कर लेते? ऐसा क्या बड़ा काम आ पड़ा? क्या होलिकोत्सव का अभी से प्रबंध करना है? ओहद्ध अरे ;चाणक्य की ओर जरा तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखकरद्ध यह ब्राह्मण कौन है? साक्षात् काल ही मालूम होता है।''[7]

आर्य चाणक्य इस अपमानपूर्ण वाक्य को सुनकर एकदम क्रोध से लाल हो गए। उनकी आँखों में खून उतरने लगा, परंतु अत्यंत सावधानी से उन्होंने प्रयत्नपूर्वक अपने क्रोध को दबाकर वही शांत–मुद्रा बनाए रखी। वे जानते थे कि इस समय यवनों को भारत से खदेड़ने के लिए मगध की सहायता चाहिए और उसके लिए राजाज्ञा प्राप्त करनी आवश्यक है। यह एक राष्ट्रकार्य है। राष्ट्रकार्य में इस प्रकार के मानापमान की चिंता नहीं की जाती। उनके स्वाभिमान को ठेस अवश्य लगी। परंतु उससे भी बढ़कर प्रश्न था राष्ट्र के स्वाभिमान का।

चाणक्य को नायकोचित्त कार्यों का निरूपण उपन्यास में पूर्णरूपेण मिल जाता है। चाणक्य, प्रधनमन्त्राी के उस निर्देशक या सलाहकार की भांति है जो एक सपफल राष्ट्र के संचालन में अपनी रणनीति विद्वता के कारण उचित राय प्रदान करता है।

चाणक्य एक शिक्षक के नायकत्व के गुणों से भरपूर है। एक शिक्षक कैसे राष्ट्र का निर्माण कर सकता है वह कैसे देश का कैस कर्णधर बन सकता है यह पूर्णत चाणक्य जैसे चरित्रा से दृष्टव्य है। उपाध्याय जी ने चाणक्य का सृजन इतिहास के गहन अध्ययन के वाद किया। चाणक्य का एक–एक गुण राष्ट्र के प्रेम से पूर्ण है। भारतीय संस्कारों से पूर्ण है।

एक शिष्य की तलाश प्रत्येक गुरु की होती है चाहे व शैक्षिक क्षेत्रा में हो या अन्य क्षेत्रा जैसे राज काज या राजनीति। इन सभी क्षेत्राों में अपने प्रवर्तक की सतत् आवश्यकता होती है। वह था चन्द्रगुप्त चाणक्य ने सभी राजाओं को एक–एक कर देश छोड़ने को मजबूर कर दिया। आचार्य चाणक्य की बु(िमता से देश को एक व्यवस्थित चक्रव्यूह बनाकर ही विदेशी आक्रान्ताओं से बचाया गया। आज भी चाणक्य जैसे विचारों से ही, रणनीति से ही देश को विकास की सीढ़ी पर अग्रसर किया जा सकता है।

चाणक्य और चंद्रगुप्त के अलावा अन्य पात्रा भी है इस उपन्यास में जो उसको प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है। उन सहायक पात्राों को योगदान को नकारा नहीं जा सकता। उनके बिना उपन्यास अधूरा है।

चाणक्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य सम्पूर्ण भारत का अभ्युदय करना था।

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

अमात्य भी एक प्रभावी पात्रा है। उसका नाम कात्यायन भी है। उसका उपनाम आमात्य 'राक्षस' भी है। वह ब्राह्मण तथा एक विद्वान पुरुष है। वह नीति शास्त्रा का ज्ञानी है नंद के राज्य को बड़ी कुशलता से सभालकर चला रहा है। वह स्वामी भक्त एवं राजभक्त भी है।

''हाँ आर्य अमात्य राक्षस तो हैं, परंतु वे तो इतने स्वामिभक्त हैं कि बिना नंद की आज्ञा के कछ करेंगे ही नहीं, और नंद आज्ञा देगा नहीं।'' चंद्रगुप्त ने बतलाया।

''पिफर भी जाना हो चाहिए ही। 'राक्षस' मेरा सहपाठी है। देशभक्त भी है। अवश्य ही वे मेरा कहना मानेगा।''[8]

अमात्य 'राक्षस' को तक्षशिला के उस ब्राह्मण के आगमन की सूचना दी गई। अमात्य ने एकदम उनको अंदर बुलवायाय देखते ही दोनों का पिछला प्रेम उमड़ आया। राक्षस ने दौड़कर चाणक्य को बाहुपाश से जकड़ लिया। दोनों बड़े प्रेम से मिले। परंतु चाणक्य तो अपनी बात कहने के लिए अधीर हो रहे थे। ''कुछ देश की भी खबर है, अमात्य राक्षस?''[9] चाणक्य ने पूछा।

''उसके लिए मगध की सेना तैयार है। मगध की प्राणपण से रक्षा की जाएगी।'' परंतु कब? कब वह कुसुमपुर को आकर घेर लेगा? आज पंचनद के छोटे राज्यों की रक्षा भी–मगध की ही रक्षा है, और पिफर देश से यवनों को बाहर करने का कार्य भी तो मगध का ही है!''[10]

उपन्यास में नंद का चरित्रा भी उच्च कोटि का है वह महापद्म नंदों के सतत पल्लवित राज्य का राजा था। इसके राज्य में चारों तरपफ कला कौशल व्यापार का बोलबाला था। वह राजा नंद 10 पदम् रुपयों का मालिक था।

मंत्रा की इतनी योग्यता होते हुए भी राजा के राजकाज में ध्यान न देने के कारण राज्य में चारों ओर गड़बड़ मच गई। प्रजा दु खी रहने लगी। प्रजारंजन के कारण ही राजा का राजा नाम पड़ा है। राजा धनानंद तो प्रजारंजन के स्थान पर अपना ही मनोरंजन करता था। भगवान् राम ने राजा का जो आदर्श रखा था तथा जिसको सभी भारतीय नरेश और राजा धनानंद के पूर्वज पालन करते आए थे, उसको वह भूल गया। राम का आदर्श था–लोकाराधन, न कि लोकशासन। हाँ इस प्रकार प्रजा की सेवा करने वाले राजा राम को प्रजा ने अपना स्वामी माना था, उनकी भक्ति करना अपना सौभाग्य समझा। राजा धनानंद ही जब प्रजा के लिए अच्छी भावना नहीं रखता था तो प्रजा में भी स्वभावत : उसके प्रति निष्ठा रखने वालों की कमी हो गई। उनके दु खों को कोई भी सुनने वाला नहीं था। राजा धनानंद तक न तो किसी की पहुँच थी और न उसको इतना अवकाश ही था कि वह अपना राग–रंग छोड़कर दु ख और दर्द की कहानियाँ सुने। इससे पूर्व नंदों के शासन–काल में प्रजा जिन अधिकारों का उपभोग कर चुकी थी उनका अपहरण उसको खलने लगा। वह तो सुख, शांति और सम्मानपूर्ण जीवन बिताने की आदी थी, परंतु नंद–राज्य के दिन उसको दूभर होते जा रहे थे। अपने चारों ओर नंद के विलासपूर्ण कृत्यों को देखकर प्रजा की नैतिक भावना को ठेस लगती थी और उसके अत्याचार देखकर उसकी आत्मा विक्षुब्ध हो उठती थी। आत्मसम्मान की रक्षा करने वाले और उसको मिटाने वालों में स्वाभाविक ही संघर्ष छिड़ गया। जगह–जगह आकाश की ओर उठने वाले धुएँ ने बताया कि अंदर आग सुलग रही है। लोगों ने इसी धूम्रपुंज में उठते हुए एक भव्य मूर्ति को देखा। यही है हमारा शासक चंद्रगुप्त मौर्य।

शीलभ्रद नामक व्यक्ति भी एक महत्वपूर्ण पात्रा हैμ''आर्य चाणक्य की आँखों में एकदम उत्सुकता की चमक आ गई। ''वत्स(एक बार उसको मुझसे मिला दो। अवश्य ही वह हमारे लिए उपयोगी होगा।'' आर्य चाणक्य ने कहा।

''आर्य! अभी जाता हूँ वह यहीं–कहीं लोगों से बातचीत कर रहा होगा। उसमें कुछ ऐसा जादू है कि जिससे एक बार बात करता है, उसे अपनी ओर खींच लेता है।''[11] शीलभद्र ने कहा।

''निस्वार्थ देशप्रेम ही वह जादू है, शीलभद्र(अच्छा, लाओ तो उस जादूगर को। देखूँ तो कैसा जादू है उसका!''[12] आर्य चाणक्य ने कहा।

उपन्यास का एक अन्य पात्रा भी बहुत महत्वपूर्ण है एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला है। राजा का मंत्रा कात्यायन बहुत ही योग्य था उसका नाम अमात्य ;राक्षसद्ध है। उसकी विद्वता निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है।

संदर्भ सूची

1. दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाङ्मय, खंड–एक, संपादक डॉ. महेश चन्द्र शर्मा–एकात्म मानवदर्शन अनुसंधन एवं विकास प्रतिष्ठान, प्रभात प्रकाशन–2016, दिल्ली।
2. 2–12. वही

सह–आचार्य
डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज,
कला संकाय, हिन्दी/पत्राकारिता विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
08800270471
Email :ommishradu2@gmail.com